डा० अमिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज.

एम. ए. हिन्दी) I सेमेस्टर
~~कवीयस्तम्~~ चतुर्थ पत्र

8.05.20

प्रश्न: 'पृथ्वीराज रासो' काव्य के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: 'पृथ्वीराज रासो चंदबरदायी द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काव्य है। इसमें मानव चेतना की अनुभूति साफ दिखलाई पड़ती है। इस महाकाव्य में भाव-पक्ष एवं कला-पक्ष का बड़ा सुन्दर निर्वाह हुआ है।

भाव पक्ष की दृष्टि से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने इस काव्य में प्रेम और सौन्दर्य का अद्भुत मिश्रण किया है। इसमें प्रेम और सौंदर्यबोध के लिए नौ रसों का समायोजन किया गया है। इन नौ रसों के माध्यम से कवि ने काव्य में ऐसा वातावरण उपस्थित किया है मानो चित्र सजीव हो उठे हों।

मुख्यतः इस काव्य में कवि ने दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान की वीरता एवं उसके उच्च आदर्श की कहानी प्रस्तुत की है। यह कथा 69 सर्गों में बंटी है। जिसमें पृथ्वीराज के जन्म से मरण तक की कहानी अंकित है। इसमें युद्ध, प्रेम, विश्वास एवं उनके आदर्श का अनुपम चित्र उपस्थित है। मूलतः पृथ्वीराज रासो वीर रस प्रधान काव्य है इसमें तत्कालीन समाज की संस्कृति, उसकी प्रवृत्ति एवं रीति-रिवाजों का सांगोपांग वर्णन हुआ है। इस दृष्टि से विचार करने पर इस महाकाव्य की उपादेयता और भी बढ़ जाती है।

यहाँ तत्कालीन समाज की सुंदर झाँकी तो देखने को मिलती ही है साथ उस समाज का आदर्श, उसकी संस्कृति और उसके वैभव के भी दर्शन हो जाते हैं।

यहाँ वीर रस के साथ-साथ शृंगार रस के दर्शन भी स्वाभाविक रूप में देखने को मिलते हैं। पृथ्वीराज का संयोगिता से प्रेम फिर विवाह और उसके बाद विरह काव्य की कथा में एक प्रवाह उत्पन्न करते हैं। इसमें संयोग शृंगार एवं विप्रलम्भ शृंगार दोनों पक्ष का समान रूप से समाहार हुआ है।

कलापक्ष की दृष्टि से विचार करने पर इस काव्य की खूबसूरती और बढ़ जाती है। 'पृथ्वीराज रासो' एक ऐसा काव्य है जिसमें समस्त अलंकारों का प्रयोग स्वतः स्फूर्त हुआ है। इसमें स्वाभाविकता एवं सौंदर्य दोनों ही है। शब्दालंकारों में अनुप्रास की छटा देखने को मिलती है तो अर्थालंकार में अर्थ की सूक्ष्मता। वैसे अन्य अलंकारों का भी यहाँ यथा संभव प्रयोग हुआ है।

'पृथ्वीराज रासो' काव्य में छंदों का विविध प्रयोग हमें आश्चर्यचकित करता है। इसमें 72 प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है, जिसे बाद में चलकर तुलसीदास जी ने अपने रामचरित मानस में उसे अपनाया। डा० नामवर सिंह ने इस संबंध में लिखा है— वस्तुतः हिन्दी ~~साहित्य~~ में चन्द को छंदों का राजा कहा जा सकता है। भाव-भंगिमा के साथ-साथ अनायास भाषा नये-नए छंदों की गति धारण करती चलती है, और विशेषता यह कि बलखाती हुई नदी में बहते हुए, चित्र में सहज आत्म-

विस्मृति का ऐसा अनुभव सुख अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। रासो एक साथ संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की छंद परंपरा के पुनरुज्जीवन तथा हिन्दी के नूतन छंद-संगीत के सूत्रपात की संधि बेला है। इस समामह् छंद संघटन में भी रासो का अपना हिन्दी काव्योचित संगति सर्वोपरि है।"

'पृथ्वीराज रासो' की काव्य भाषा पात्रानुकूल एवं भावानुकूल है। इस काव्य की भाषा के संबंध में डा० विपिन बिहारी त्रिवेदी ने लिखा है— "सफल छंदों की विराट पृष्ठभूमि, हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी भाषाओं की संक्रांतिकालीन रचना, गौड़ीय भाषाओं की अभिसंधि तथा उत्कृष्ट निदर्शन, समकालीन युग का सांस्कृतिक प्रमाण, उत्तर भारत का आर्थिक मानचित्र, विभिन्न मतावलंबियों के दार्शनिक तत्वों की आरण्यता तथा मानव की चित्तवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषक, यह अपने ढंग का अप्रतिम महाकाव्य है।"

पृथ्वीरासो का महत्व इस दृष्टि से भी बढ़ जाता है कि यह हिन्दी का पहला मौलिक महाकाव्य है। इसमें महाकाव्य होने के गुण स्वयं में प्रकट हैं। साहित्यिक लक्षण प्राप्त होने के साथ-साथ इसमें राष्ट्रीय चेतना का विस्तार मिलता है। जिस प्रकार महाभारत एवं रामायण पढ़ने पर हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति को जानने का अवसर प्राप्त होता है, इसी प्रकार रासो महाकाव्य पढ़ने पर अपनी सभ्यता और संस्कृति का बोध होता है। क्योंकि इसमें हमारे राष्ट्रीय जीवन का सार छिपा है। यह हमारे राष्ट्रीय आदर्शों को स्थापित करने वाला महाकाव्य है।

P.G. I semester
CC - IV
"Prithviraj Raso ka mahtva"